IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

# मोदीनगर तहसील में ऐतिहासिक मूर्तिशिल्पों का सर्वेक्षण

**सचिन**

*( छात्र परास्नातक डिप्लोमा इन आर्कियोलॉजी, पंडित दीनदयाल उपाध्याय पुरातत्व संस्थान )*

**सारांश :-**

प्रस्तुत शोद्ध पत्र मोदीनगर तहसील में विद्यमान ऐतिहासिक मूर्तिशिल्पों पर प्रकाश डालता है, इन शिल्प अवशेषों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता एक राजकीय कला दुसरा स्थानीय लोककला। इस क्षेत्र से ऐतिहासिक शिवलिंगों की अधिकता शैव मत के प्रभाव को इंगित करती है।

**मुख्य शब्द :-** मोदीनगर का इतिहास, ऐतिहासिक मूर्तिशिल्प, प्राचीन शिवलिंग

**प्रस्तावना :-**

प्रस्तुत शोद्ध पत्र में ऐतिहासिक महत्व के मूर्तिशिल्प अवशेषों पर ध्यान केन्द्रित कर अध्ययन क्षेत्र मोदीनगर तहसील में किए गए पुरातात्विक सर्वेक्षण के परिणाम प्रस्तुत किए गए है। मोदीनगर तहसील पश्चिमी उत्तरप्रदेश के गाजियाबाद जनपद में स्थित है गाजियाबाद जनपद प्रशासनिक दृष्टि से तीन तहसीलों- गाजियाबाद, लोनी और मोदीनगर में विभक्त है। मोदीनगर- तहसील ( 28°49’41”N 77°34’08”E ) जनपदीय मुख्यालय से लगभग 30 किमी उत्तर पश्चिम में राष्ट्रीय राजमार्ग 58 पर गाजियाबाद एंव मेरठ के मध्य स्थित है। मोदीनगर तहसील के उत्तर मे मेरठ जनपद, दक्षिण में गाजियाबाद तहसील पूर्व में हापुड जनपद, तथा पश्चिम में बागपत जनपद है। मोदीनगर तहसील का अधिकांश क्षेत्र ग्रामीण आंचल से सम्बन्धित है। पश्चिम दिशा में हिंडन नदी गाजियाबाद तथा बागपत जनपद के मध्य एक प्राकृतिक सीमा का निर्धारण करती है। पुरातात्विक द्रष्टिकोण से हिंडन नदी बहुत ही महत्वपूर्ण है, नदी के दोनो तटों पर कई महत्वपूर्ण पुरास्थल स्थित है। हालाँकि उपरी गंगा घाटी के मेरठ मंडल व निकटवर्ती क्षेत्र में गंगा नदी से अधिक पुरास्थल हिंडन नदी के तट पर स्थित है। नदी के बाएं तट पर अल्लापुर, सुथारी, कुम्हेडा, सुराना, शाहाबाद जखेवा , काजमपुर आदि पुरास्थल मोदीनगर तहसील मे स्थित है। मेरठ जनपद मे आलमगीरपुर नामक हडप्पा सभ्यता से सम्बन्धित पुरास्थल भी हिंडन नदी के बाएं तट पर ही स्थित है। ऐतिहासिक

दृष्टिकोण में इस क्षेत्र में मानव अधिवास का आरम्भ गैरिक मृदभांड संस्कृति से आरम्भ होता है, जिसके प्रमाण काजमपुर गांव से प्राप्त हुएं है। उसके उपरांत अल्लापुर पुरास्थल से चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति से लेकर मध्यकालीन सांस्कृतिक निरंतरता के प्रमाण प्राप्त होते है। 1933 ईस्वी के पुर्व मोदीनगर कस्बा बेगमाबाद नामक गांव के रूप मे जाना जाता था। जिसकी स्थापना नवाब जाफर अली द्वारा मुगल बादशाह मुहम्मद शाह के समय की गई थी। सन् 1933 में रायबहादुर गुजरमल मोदी द्वारा यहां पर मोदी सुगर मिल की स्थापना के साथ इस कस्बे का नाम मोदीनगर रखा। 1976 में मेरठ से अलग होकर गाजियाबाद एक स्वतंत्र जिला बना उसके बाद 1990 में मोदीनगर तहसील बना। 2011 की जनगणना के अनुसार मोदीनगर तहसील में 131 गांव सम्मिलित है। और यहां की कुल जनसंख्या 637485 और कुल क्षेत्रफल 452.9 किमी² भोगोलिक दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह क्षेत्र नदियों द्वारा जमा की गई जलोढ मिट्टी से बना पूर्णतया मैदानी क्षेत्र है, जोकि अत्यंत ही उपजाऊ है। खनिज के नाम पर इस क्षेत्र में केवल ***कंकर*** स्टोन ही विद्यमान है। जिसका उपयोग पुराने समय में चूना बनाने में किया जाता रहा है।

**पूर्ववर्ती अनुसंधान की समीक्षा** :-

सन् 1958 ईस्वी में आलमगीरपुर की खोज के पश्चात मेरठ जनपद में ग्रामवार पुरातात्विक सर्वेक्षण कार्य हुआ, उस समय मोदीनगर तहसील का यह मेरठ जनपद की गाजियाबाद तहसील के अन्तर्गत था। हालांकि इन सर्वेक्षणों में मुख्यतः पुरास्थलों यथा टीलों की खोज पर ही ध्यान केंद्रित किया गया। जिसके परिणाम स्वरूप की पुरास्थल प्रकाश में आए। और इन सर्वेक्षणों के परिणाम भी वर्षवार *इंडियन आर्कियोलॉजी ए रिव्यू* में प्रकाशित हुए। 1998 में आकस्मिक खोज के रूप में मोदीनगर के बिसोखर गांव में कुछ देवमूर्ति युक्त शिलाएं प्राप्त हुई थी जिसका पुरातत्व विभाग द्वारा विधिवत उत्खनन किया गया उत्खनन का विवरण भी *इन्डियन आर्कियोलॉजी ए रिव्यू 1998-99* मे प्रकाशित हुआ 2006 2006 डॉ. कृष्ण कांत शर्मा की पुस्तक *यमुना-हिंडन दोआब का पुरातात्विक सर्वेक्षण* में मोदीनगर में हिंडन नदी के किनारे स्थित सुराना गांव में प्रतिहार शैली के मंदिरों मे प्रयुक्त होने वाले अलंकरण से युक्त पाषाण खंडो का वर्णन किया है। अतः उक्त साक्ष्यों से प्रभावित होकर प्राचीन मूर्तिशिल्पों की खोज को लक्ष्य बनाकर हमारे द्वारा जो सर्वेक्षण किया उसी के परिणाम इस शोद्ध पत्र में प्रस्तुत किए गए।

**शोद्ध विधि** :- प्रस्तुत शोद्ध पत्र में प्राथमिक स्रोत के रूप में क्षेत्रीय सर्वेक्षण के माध्यम से ग्रामवार सर्वेक्षण में स्थानीय लोगो से बातचीत कर विद्यमान अवशेषों से सम्बंधित सूचनाएं यथा प्रचलित किवदंतीयां एंवम उनके छायाचित्र एकत्रित करना इत्यादि साथ ही द्वितीय स्रोत के रूप में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा प्रकाशित इंडियन आर्कियोलॉजी ए रिव्यू से उपयुक्त सूचनाएं ग्रहण कर यह शोद्ध पत्र तैयार किया गया है।

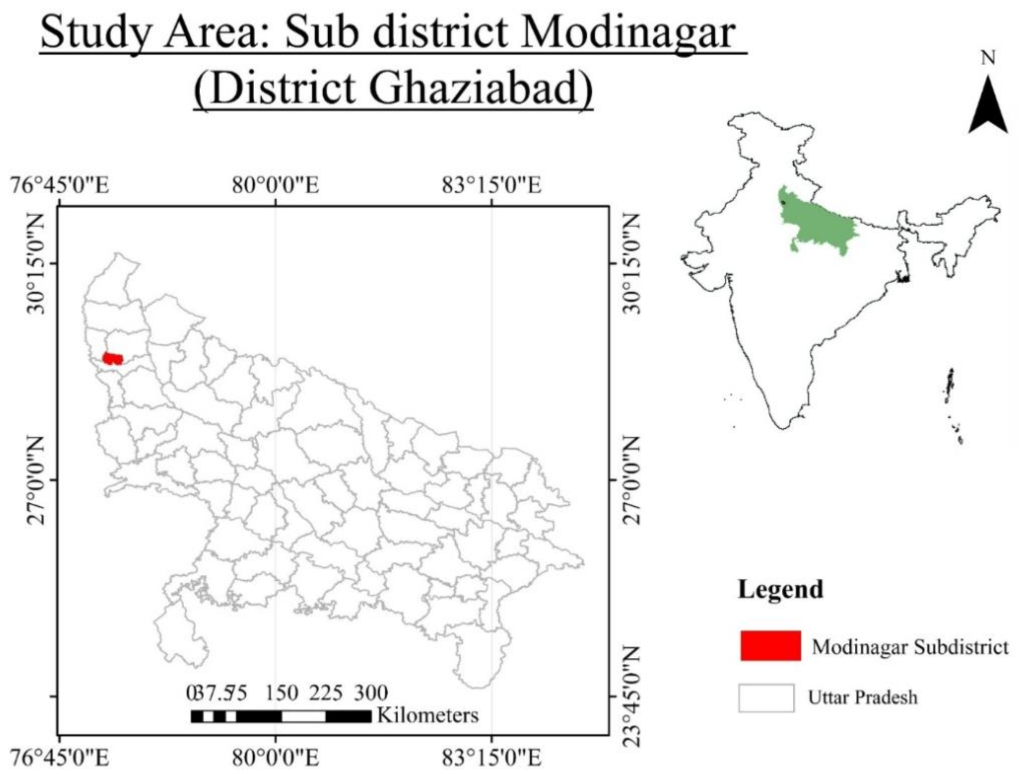


**मानचित्र पर अध्ययन क्षेत्र मोदीनगर तहसील की स्थिति**

( मानचित्र सौजन्य से **H. Vickneshwaran** )

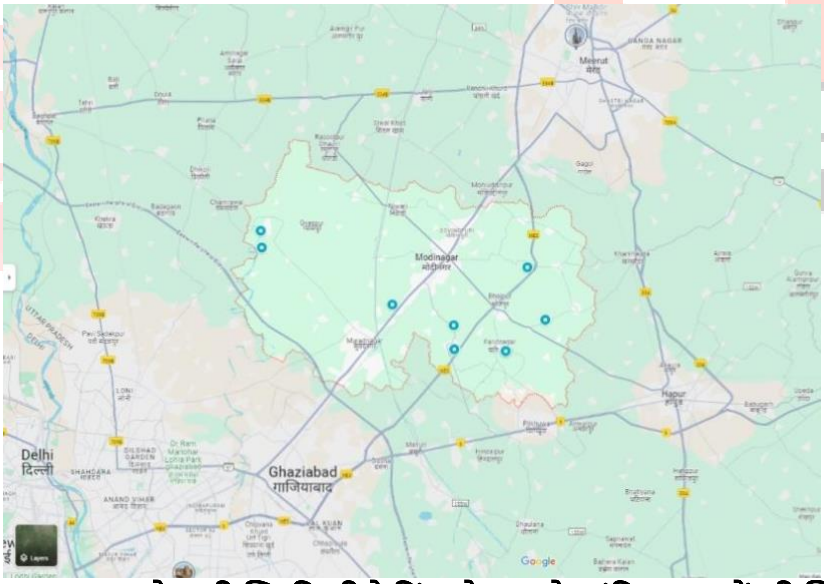


**गूगल मानचित्र पर अध्ययन क्षेत्र की स्थिति नीले बिंदुओ द्वारा रेखांकित स्थलों की स्थिति**

सौजन्य से गूगल मानचित्र

**बिसोखर के प्रतिहार कालीन मंदिर का मूर्तिशिल्प :-**

बिसोखर गांव दिल्ली – मेरठ रोड NH-58 पर स्थित है। इस मंदिर की खोज एक आकस्मिक प्राप्ति थी। जून 1998 में गांव की उत्तर दिशा में एक किसान द्वारा अपने खेत की ऊंची नीची जगह को समतल कराते समय मंदिर की पाषाण शिलाएं प्राप्त हुई। 4 जनवरी 1999 में उत्खन्न शाखा ।। की अधीक्षक पुरातत्विद श्री मधुबाला के नेतृत्व में इस स्थल का उत्खन्न किया गया। जिसमें मंदिर के भग्नावशेषों के साथ साथ यहां पर एक बावड़ी भी प्राप्त हुई थी। उक्त स्थल का ग्रामीणों द्वारा कृषि कार्यों में प्रयोग के कारण यहां से मंदिर की मूल योजना की जानकारी प्राप्त न हो सकी। उत्खन्न में अलंकृत इंटे तथा मंदिर स्थापत्य से सम्बन्धित 16 पाषाण खंड प्राप्त हुए थे। जिनमें तीन द्वार सरदल ( Lintel ) तीन द्वार स्तम्भ (door jamb) एक प्रणाल दो द्वार मंडप स्तम्भ जिसपर घट्टपल्लव, एंव कीर्तिमुख का अंकन किया गया है।, दो अर्ध स्तम्भ एक कृष्ण लीला अंकन युक्त पट्ट आदि सम्मिलित है।

जिनमें से एक द्वार सरदल के उपर विष्णु दशावतारों "मत्स्य , कूर्म , वराह , नरसिंह , वामन , परशुराम, राम , बलराम , बुद्ध, एंव कल्कि" का अंकन है तथा ललाटबिंब पर गरुडारुढ विष्णु को दर्शाया गया है। द्वार स्तम्भ तीन शाखाओं में विभक्त है। दोनो और पर्णावली शाखा के अलंकरण के मध्य में मिथुन आकृतियों की एक शाखा तथा इसकी उपशाखा के रूप में नृत्यरत गंधर्वों की एक शाखा को दर्शाया गया है। द्वार स्तम्भ के नीचे के भाग पर मंगलघट से युक्त छत्रधारी परिचारिका के साथ मकरवाहिनी गंगा और कूर्म वाहिनी यमुना को दर्शाया गया है। गंगा के साथ हाथ में चक्र लिए तथा यमुना के साथ शंख लिए एक – एक गण को भी दर्शाया गया है यह द्वार शाखा वर्तमान में धरोहर भवन नई दिल्ली में प्रदर्शित है।

**सहाबाद जखेवा (शिवलिंग) :-**

यह स्थान भी दिल्ली मेरठ मार्ग पर स्थित है। इसका निकटवर्ती गांव अब्बूपुर है। यह शिवलिंग NH-58 दिल्ली मेरठ मार्ग से लगभग 1 किलोमीटर उत्तर पश्चिम दिशा में और ऊपरी गंगा नहर के बाएं तट स्थित प्राचीन महादेव मंदिर (28°48'11"N 77°31'54"E) में स्थापित है। जोकि निकट के ऐतिहासिक महत्व के एक टीले से प्राप्त हुआ था। जिसे कृषि कार्य के चलते अधिकांशतः नष्ट कर दिया गया है। यह शिवलिंग लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। जोकि एक गोलाकार पीठ पर स्थापित है। तह पीठ भी इसी प्रकार के पत्थर से निर्मित है। शास्त्रीय मान्यताओं के अनुरूप शिवलिंग तीन भागों में विभाजित है, नीचे का ब्रह्म भाग जोकि ब्रह्मा को समर्पित होता है आकार मे चकौर है। विष्णु को समर्पित मध्यभाग अष्टकोणीय तथा रुद्रभाग गोलाकार है। तथा रुद्रभाग पर ब्रह्मसूत्र भी अंकित है। इस शिवलिंग को पूर्वमध्यकाल 9 -10 वीं सदी में निर्मित माना जा सकता है।

**युसूफपुर नंग्लाबैर (तीर्थंकर प्रतिमा):-**

यह गांव दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस वे से बाएं हाथ पर उत्तर पश्चिम में लगभग 1.5 किमी. की दूरी पर स्थित है। गांव के बाहर 200 मीटर उत्तर में (28°47'15"N 77°35'06"E) चामुंडा मंदिर में यह प्रतिमा स्थापित है। जोकि उसी स्थान पर के खेत से प्राप्त हुई थी। यह मस्तक विहिन प्रतिमा कई खंडों मे बिखरी हुई अवस्था में प्राप्त हुई थी। तथा दो बडे भागों को जोडकर मंदिर में स्थापित कि गई है। ग्रामीणों द्वारा इसे चामुण्डा देवी के रूप में पुजा जाता है। प्रतिमा का निर्माण लाल बलुआ पत्थर पर किया गया है। कदाचित प्रतिमा का मस्तक वाला प्राप्त नही हो सका इसलिए यह मस्तक विहिन है। और प्रतिमा के वक्ष स्थल पर श्रीवस्त्स चिन्ह का अभाव है। प्रतिमा को पद्मासन में बैठ हुए दर्शाया गया है। प्रतिमा के दोनो हाथ कंधे पर से ही खंडित है। सम्भवतः हाथ ध्यान मुद्रा में रहे होंगे ? प्रतिमा को कमल आसान पर विराजमान दर्शाया गया है। कमल आसन के नीचे बने लाक्षण चिन्ह ही अस्पष्ट जिन्हे ग्रामिणों द्वारा दूध चढाए जाने के कारण क्षति पहुंची है।

**भटजन (ग्राम-देवी प्रतिमा):-**

यह गांव दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस वे से बाएं हाथ पर उत्तर दिशा में लगभग 900 मीटर की दूरी पर स्थित है। भटजन गांव में बस्ती के बाहर गांव की पूर्वी दिशा में श्मशान भूमी के समीप ही एक खेत में (28°49’54”N 77°38’57”E) खुले आकाश के नीचे यह प्रतिमा स्थापित है। प्रतिमा में नारी सुलभ विशेषताएं सुस्पष्ट है उदर एंव कटि-प्रदेश की बनावट इसके नारी प्रतिमा होने की और इंगित करते है, यह प्रतिमा स्थानीय कंकर स्टोन ब्लॉक पर बनी है, जो एक स्तम्भ सदृश्य आकार का है। कंकर स्टोन पर कोई आकृति अंकित करना अत्यंत दुष्कर कार्य है, प्रतिमा के दोनो पैर एक ही दिशा में चलायमान दर्शाए गए है। बायां हाथ कंधे तक वरद मुद्रा में उठाए हुए है। तथा कलाई से नीचें दाएं हाथ की स्थिति अस्पष्ट है। यह कंकर स्टोन इस क्षेत्र में पारम्परिक रूप से चूना तैयार करने के काम आता था। यद्यपि मध्यकाल में इस पत्थर के ब्लॉकस का उपयोग दिवार की चिनाई में ईंटो के रूप मे भी हुआ था।

**कलछीना (शिवलिंग):-**

कलछीना गांव में (28°46'10"N 77°35'08"E) तालाब के पास मंदिर मे एक शिवलिंग स्थापित है, जोकि बनावट में सहाबाद जखेवा के शिवलिंग से साम्य रखता है। इस शिवलिंग का केवल रुद्रभाग ही दृश्यमान है, जिसपर ब्रह्मसूत्र को स्पष्ट देखा जा सकता है। इस शिवलिंग से सम्बन्धित एक किवदंती है कि इसकी स्थापना स्वंय दिल्ली नरेश अनंगपाल तोमर द्वारा की थी।

**भदोला (शिवलिंग):-**

भदोला गांव मोदीनगर हापुड मार्ग पर बाएं हाथ पर लगभग 1 किमी. की दूरी पर स्थित है। यहां गांव की बस्ती के अंतिम छोर पर (28°47'31"N 77°39'53"E) स्थित मंदिर के गर्भगृह में एक शिवलिंग स्थापित है। जिसकी विशेषता यह है कि इस शिवलिंग पर तीन पंक्ति में देवनागरी लिपि का एक लघु अभिलेख उत्कीर्ण है। अत्यधिक क्षरण के चलते यह अभिलेख

अपठनीय है लेकिन प्रथम पंक्ति में 'स' 'वं' 'त' आदि शब्द उल्लेखनीय है। बलुआ पत्थर का यह शिवलिंग मूलतः कोई स्तम्भ प्रतित होता है।

**फरीदनगर (शिवलिंग):-**

फरीदनगर कस्बे में गांव के अंतिम छोर पर फरीदनगर से पिलखुआ जाने वाले मार्ग पर स्थित बडा शिवमंदिर (28°46'05"N 77°37'48"E) कें गर्भगृह में एक ऐतिहासिक शिवलिंग तथा एक नंदी की लघु प्रतिमा स्थापित है। जोकी लाल बलुआ पत्थर से निर्मित है। किवदंती अनुसार यह शिवलिंग और नंदी प्रतिमा इसी स्थान पर स्थानीय किसान को प्राप्त हुई थी। यह शिवलिंग मध्यकालीन प्रतीत होता है। मंदिर परिसर में लाखौरी इंटों से निर्मित संरचनाओं की नींवों को भी देखा जा सकता है।

**सुथारी (खण्डित प्रतिमाएं):-**

सुथारी गांव हिंडन नदी के बाएं तट पर स्थित है। इस गांव में ऐतिहासिक महत्व के टीले को समतल करते समय कुछ प्राचीन प्रतिमाएं खंडित अवस्था में प्राप्त हुई थी  इस टीले से चित्रित धूसर मृदभांड संस्कृति से लेकर मध्यकाल तक के अवशेषों रिपोर्टिड है अब यह टीला पूर्णतः समतल कर दिया गया है तथा यहां पर कृषिकार्य किया जा रहा है। यहां से प्राप्त खंडित प्रतिमा एंव एक पक्की मिट्टी से बना प्रतिमा बनाने का सांची टीले के पास में ही स्थित मंशा देवी मंदिर (28°50'46"N 77°25'05"E) में स्थापित है। जिन पर ग्रामीणों द्वारा रंग किया गया है तथा उन अवशेषों की पूजा की जाती इसलिए इनकी पहचान कर पाना संभव नही है।

**सुराना (शिवलिंग):-**

ग्राम सुराना हिंडन नदी के बाएं तट पर अवस्थित है। नदी तट पर गांव के अंतिम भाग में एक छोटे टीले पर स्थित घुमेश्वर महादेव मंदिर परिसर में ही नवीं सदी के प्रतिहार शैली के मंदिरों मे प्रयुक्त होने वाले अलंकरण से युक्त पत्थरों का वर्णन डॉ. कृष्ण कांत शर्मा ने अपनी पुस्तक *यमुना – हिंडन दोआब का पुरातात्विक सर्वेक्षण* में किया है। मंदिर के गर्भगृह में एक शिवलिंग विद्यमान है, जिसकी योनी पीठ अपेक्षाकृत अधिक प्राचीन है, जोकि लाल बलुआ पत्थर से बनी है। गर्भगृह के बाहर मंदिर परिसर में एक प्राचीन स्तम्भ, लाल बलुआ पत्थर की बनी लघु नंदी प्रतिमा देखी  जा सकती है।

**निष्कर्ष :-**

अपने इस सर्वेक्षण के दौरान हमनें पाया कि अपने अध्ययन क्षेत्र मोदीनगर तहसील के कुछ अन्य स्थानों से भी ऐतिहासिक महत्व के मूर्तिशिल्पों के अवशेष प्राप्त हो चुके है जिन्हे , उनके सांस्कृतिक एंव पुरातात्विक महत्व से अनभिज्ञ लोगो द्वारा जल-धारा में प्रवाहित कर दिया गया था। इस शोद्ध पत्र में प्रस्तुत अवशेषों की विवेचना करने पर हम पाते है कि बिसोखर और सुराना से प्राप्त प्रतिहार कालीन मंदिर के अवशेष राजकीय कला का प्रतिनिधित्व करते है जिन्हे सम्भवतः स्थानीय शासक वर्ग द्वारा निर्मित कराया गया था। वही दुसरी और भटजन से प्राप्त स्थानीय कंकर पत्थर पर उत्कीर्ण ग्राम देवी की

प्रतिमा लोक कला का प्रतिनिधित्व करती है। जिसका निर्माण सम्भवतः स्थानीय जनमानस द्वारा कराया गया था। शिवलिंगों की अधिकता शैव मत की लोकप्रियता को इंगित करती है।

**सन्दर्भ ग्रन्थ :-**


**1.**शर्मा, कृष्णकांत (2017) यमुना- हिंडन दोआब का पुरातात्विक सर्वेक्षण पृष्ठ - 59

**2.** वही. पृष्ठ – 65

**3. (**1966-67) इंडियन आर्कियोलॉजी ए रिव्यू , पृष्ठ – 32-33

**4.** (1998-99) इंडियन आर्कियोलॉजी ए रिव्यू , पृष्ठ -179

**5.** सिंह, रेवंत विक्रम (2003) सेटलमेंट इन दॉ यमुना-हिंडन दोआब पृष्ठ- 83-84

बिसोखर से प्राप्त प्रतिहार कालीन मंदिर की अलंकृत विष्णु दशावतारों से युक्त द्वार शाखा, (चित्र- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के सौजन्य से )

शिवलिंग (साहबाद जखेवा )

तीर्थंकर (युसूफपुर नंग्लाबैर)

ग्राम देवी ( भटजन )

शिवलिंग ( भदोला )

शिवलिंग ( कलछीना )

नन्दी ( फरीदनगर )

शिवलिंग ( सुराना )

क्षरणयुक्त प्राचीन शिवलिंग (सुराना)

मंदिर स्तम्भ ( सुराना)

खंडित नंदी प्रतिमा (सुराना)

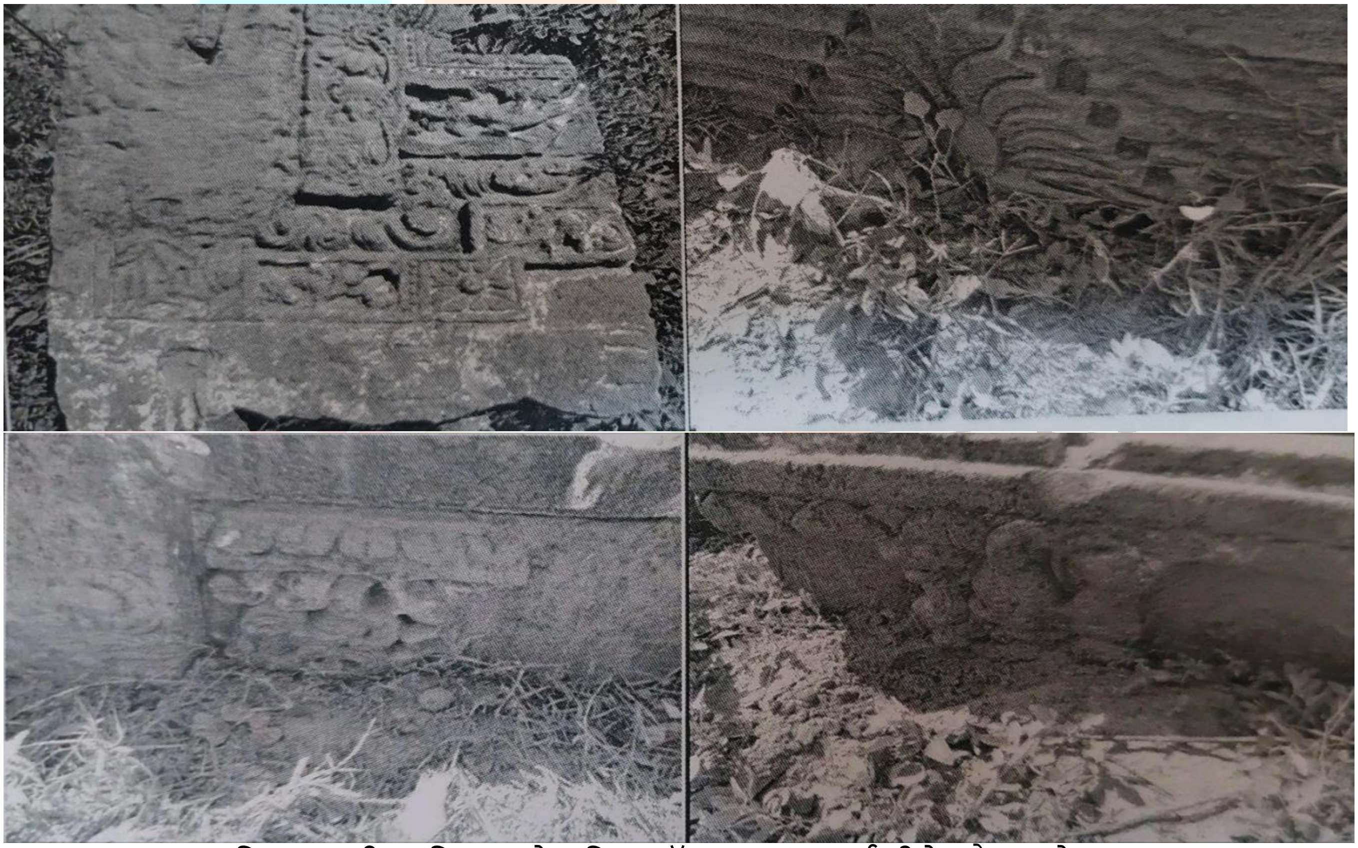

सुराना प्रतिहार कालीन मंदिर अवशेष, चित्र- डॉ. कृष्णकांत शर्मा जी के सौजन्य से

खंडित प्रतिमाएं (सुथारी)